

भ्रमजाल पुं. (तत्.) भ्रमरूपी पाश, जाल जैसे-संसार का भ्रमजाल।

भ्रमण पुं. (तत्.) 1. विचरण, घूमना, फिरना 2. यात्रा, सफर 3. सैर 4. चक्कर 5. भटकाव ।

भ्रमणकारी वि. (तद्.) भ्रमण करने वाला।

भ्रमणीय वि. (तत्.) भ्रमण के योग्य।

भ्रमद वि. (तत्.) भ्रम उत्पन्न करने वाला, भ्रामक।

भ्रमन पुं. (तत्.) भ्रमण, घूमना।

भ्रमना अ.क्रि. (तद्.) 1. भ्रमण करना 2. भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना, भ्रान्त होना 3. घूमना 4. (मार्ग भूलकर) भटकना।

भ्रमि क्रि.वि. (देश.) 1. चक्कर खाकर, मँडराकर 2. भ्रम में पड़कर 3. भटककर।

भ्रममूलक वि. (तत्.) जिसके मूल में भ्रम हो, भ्रम से उत्पन्न।

भ्रमर पुं. (तत्.) 'भौरा' नामक कीट। (काव्य.) चंचल मन वाला नायक जो अनेक नायिकाओं से संबंध रखता है।

भ्रमरगीत पुं. (तत्.) गोपियों द्वारा भ्रमर को संबोधित कर, उसे कृष्ण के समान छली प्रेमी बताते हुए, उद्धव से उपालंभपूर्ण बातचीत का सरस, काव्यात्मक वर्णन। गोपी-उद्धव-संवाद वाला काव्य टि. कृष्ण-भक्त कवियों को भ्रमरगीत-परंपरा भागवतपुराण के दशम स्कंध से प्राप्त हुई। हिंदी की भ्रमरगीत-काव्य-परंपरा में 'सूरसागर' का भ्रमरगीत-प्रसंग तथा नंददास की काव्य-कृति 'भ्रमरगीत' विशेष प्रसिद्ध हैं।

भ्रमरगुफा स्त्री. (योग.) ब्रह्मरंध।

भ्रमरविलसिता वि. (तत्.) भ्रमरों से शोभायुक्त स्त्री. छंद एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण और लघु-गुरु (म भ न ल ग) के योग से 11 वर्ण होते हैं तथा 4-7 पर यति होती है।

भ्रमरहस्त पुं. (तत्.) एक प्रकार का हस्त-विन्यास।

भ्रमरानंद पुं. (तत्.) मौलसिरी का पेड़, बकुल वृक्ष।

भ्रमराली स्त्री. (तत्.) भ्रमर-पंक्ति, भौरों का समूह, भौरै।

भ्रमरावली स्त्री. (तत्.) भ्रमरों की पंक्ति, भौरों का समूह, भौरै छंद एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 5 सगण के योग से 15 वर्ण होते हैं तथा 5-10 पर यति होती है, नलिनी छंद मनहरण छंद।

भ्रमरी स्त्री. (तत्.) नारी/मादा भ्रमर, षट्पदी।

भ्रमवारि पुं. (तत्.) रेगिस्तान आदि में यात्री को दूर कहीं पर जलाशय का मिथ्या दर्शन, मृगमरीचिका।

भ्रमात्मक वि. (तत्.) 1. भ्रम से युक्त, भ्रान्त, भ्रमपूर्ण 2. भ्रम उत्पन्न करने वाला।

भ्रमाना स.क्रि. (देश.) 1. चक्कर देना 2. इधर-उधर घुमाना-फिराना 3. भ्रमित करना, धोखे में डालना।

भ्रमाइ क्रि.वि. (देश.) विभ्रमित करके।

भ्रमासक्त वि. (तत्.) भ्रमित, भ्रान्त जैसे-भ्रमासक्त वाणी।

भ्रमासक्ति स्त्री. (तत्.) गलत धारणा या विचार, भ्रम, भ्रान्ति मनो. एक प्रकार की मानसिक विकृति जिसमें रोगी को कोई ऐसा मिथ्या विश्वास होता है जिसे तर्क या विरोधी प्रमाणों द्वारा भी दूर नहीं किया जा सकता, भ्रान्ति, वहम।

भ्रमित वि. (तत्.) 1. जिसे भ्रम हुआ हो, भ्रान्त 2. जिसे भ्रम में डाला गया हो, भ्रान्त 3. चक्कर खाता हुआ, घूमता हुआ 4. जो घुमाया गया हो।

भ्रष्ट वि. (तत्.) 1. ऊँचाई से गिरा हुआ, पतित 2. ऊँचाई से गिरने के कारण टूटा फूटा हुआ 3. नीति, आचार या धर्म आदि की दृष्टि से गिरा हुआ, पतित, अधःपतित 4. बिगड़े हुए चरित्र वाला, दुश्चरित्र 5. नष्ट।